ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)61-63
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
प्राचार्य, राजन पीजी कॉलेज, हिकमा, कोपागंज, मऊ

Corresponding Author :
डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
प्राचार्य, राजन पीजी कॉलेज, हिकमा, कोपागंज, मऊ

मित्रता की मिसाल-'कवि चन्द्रवरदाई'

"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण,
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।"

आज से कोई लगभग बारह सौ साल पहले बहुत ही अर्थपूर्ण दोहा कहा गया था। आप लोग समझ गए होंगे किसकी बात हो रही है यहाँ? जी हां, हम बात कर रहे हैं भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान (राय पिथौरा) के मित्र, सखा तथा राजकवि और हिन्दी के आदि महाकवि चंदबरदाई की। इनके एक दोहे ने पृथ्वीराज चौहान के घोर शत्रु मोहम्मद गोरी की जिंदगी तमाम कर दी और चन्द्रवरदाई को भारतीय इतिहास में अमर कर दिया। चन्द्रवरदाई, पृथ्वीराज चौहान के केवल राजकवि ही नहीं थे बल्कि परम मित्र भी थे। ये मित्रता का सम्बन्ध शायद किसी भी अन्य सम्बन्ध से सर्वथा श्रेष्ठ रहा है और आगे भी रहेगा। जब कभी भी दुनियादारी से मन ऊबे तो थोड़ा कृष्ण और सुदामा की कहानी पढ़िए या फिर राम और सुग्रीव की कहानी, कर्ण और दुर्योधन की कहानी आदि। कितने तो पात्र और घटनाएँ इस सन्दर्भ में अपनी प्रविष्टि की मजबूत वकालत करते हुए दिखायी देने लगते हैं। शायद ये हमारी संपन्न संस्कृति का प्रमाण भी है कि इतिहास हमे शौर्य, वीरता, त्याग, बलिदान, दया, प्रेम, मैत्री आदि के उचित, पुष्ट, तर्कसंगत एवं भावपूर्ण, अनेकों किस्से, कहानियां देता है। आज का किस्सा भी एक रोचक मैत्री प्रसंग से ओतप्रोत है।

चंदबरदाई हिंदी साहित्य (आदिकाल) के केवल महान कवि ही नहीं थे बल्कि मित्रता का एक कालजई उदाहरण भी है। उन्होंने मित्रता की ऐसी मिसाल पेश की जो आज भी लोगों के लिए प्रेरणा है। उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के शौर्य वर्णन में हिंदी बृज भाषा के प्रसिद्द ग्रन्थ "पृथ्वीराजरासो" कि रचना की थी। कुछ विद्वान उन्हें हिंदी का पहला कवि और उनकी रचना पृथ्वीराज रासो को हिंदी की पहली रचना मानते है। पृथ्वीराज रासो हिंदी का सबसे बड़ा काव्य-ग्रंथ है। इस ग्रन्थ में 10,000 से अधिक छंद हैं। चंदबरदाई ने इस ग्रंथ में उत्तर भारतीय क्षत्रिय समाज व उनकी परंपराओं के सन्दर्भ में विस्तार से वर्णन किया है। इस हेतु "पृथ्वीराजरासो" का ऐतिहासिक महत्व भी है।

चंदबरदाई का जन्म लगभग 30 सितंबर 1148 ईस्वी लाहौर में और मृत्यु 1192 ईस्वी गजनी में हुआ था। वे महाराजा पृथ्वीराज चौहान के मित्र व राजकवि थे चंदबरदाई अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक पृथ्वीराज चौहान के साथ ही रहे। वे काव्य कला व युद्ध कला दोनों में कुशल थे। अतः युद्ध के समय भी वे पृथ्वीराज चौहान के साथ ही रहते थे।

वह जाति का राव या भाट था। बाद में वह अजमेर-दिल्ली के सुविख्यात अंतिम राजपूत सम्राट पृथ्वीराज का सम्माननीय सखा, राजकवि और सहयोगी हो गया था। इससे उसका अधिकांश जीवन महाराजा पृथ्वीराज चौहान के साथ दिल्ली में बीता था। वह राजधानी और युद्ध क्षेत्र सब जगह पृथ्वीराज के साथ रहा था। उसकी विद्यमानता का काल 12 वीं शती है। चंदवरदाई का प्रसिद्ध ग्रंथ "पृथ्वीराजरासो" है।इसकी भाषा को भाषा-शास्त्रियों ने पिंगल कहा है, जो राजस्थान में ब्रजभाषा का पर्याय है। इसलिए चंदवरदाई को ब्रजभाषा हिन्दी का प्रथम महाकवि माना जाता है। 'रासो' की रचना महाराज पृथ्वीराज के युद्ध-वर्णन के लिए हुई है। इसमें उनके शौर्य व वीरतापूर्ण युद्धों और प्रेम-प्रसंगों का कथन है। इस ग्रंथ में वीर और श्रृंगार दो ही रस है। चंदबरदाई को हिंदी का पहला कवि और उनकी रचना पृथ्वीराज रासो को हिंदी की पहली रचना होने का सम्मान प्राप्त है। पृथ्वीराज रासो हिंदी का सबसे बड़ा काव्य-ग्रंथ है। इसमें 10,000 से अधिक छंद हैं और तत्कालीन प्रचलित 6 भाषाओं का प्रयोग किया गया है। जैसे कादंबरी के संबंध में प्रसिद्ध है कि उसका पिछला भाग बाण भट्ट के पुत्र ने पूरा किया है, वैसे ही रासो के पिछले भाग का भी चंद के पुत्र जल्हण द्वारा पूर्ण किया गया है। इनका जीवन पृथ्वीराज के जीवन के साथ ऐसा मिला हुआ था कि अलग नहीं किया जा सकता। युद्ध में, आखेट में, सभा में, यात्रा में, सदा महाराज के साथ रहते थे और जहाँ जो बातें होती थीं, सब में सम्मिलित रहते थे। यहां तक दोनों मौत को भी एक साथ गले लगाया था। चन्द्रवरदाई ने मित्रता की ऐसी मिसाल पेश की जो काबिले तारीफ है। चंदवरदाई के इस प्रसिद्ध ग्रंथ "पृथ्वीराजरासो" का प्राचीन भारतीय इतिहास में काफी महत्वपूर्ण योगदान है। राजपूतों की उत्पत्ति, राजपूत सम्राट पृथ्वीराज चौहान आदि के विषय में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। पृथ्वीराज चौहान और राजकुमारी संयोगिता की ऐतिहासिक प्रेम कहानी का बड़ा ही सुन्दर वर्णन चन्द्रवरदाई ने पृथ्वीराजरासो में किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है- चंदबरदाई (संवत् 1205-1249), ये हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका पृथ्वीराज रासो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है।

चन्द्रवरदाई ने पृथ्वीराज चौहान के परम शत्रु मुहम्मद गोरी से प्रतिशोध लेने में अहम भूमिका निभाई थी। उसने बड़े ही सूझ-बूझ से पृथ्वीराज के हाथों मोहम्मद गोरी की हत्या करा बदल लें लिया। कहते है जब छल से मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना उन्हें अन्धा कर दिया था। उसके बाद मोहम्मद गौरी ने चन्द्रवरदाई को पृथ्वीराज चौहान से उनकी आखिरी इच्छा पूछने को कहा। तभी पृथ्वीराज चौहान और चंदबरदाई ने मुहम्मद गौरी से प्रतिशोध लेने की योजना बना ली। पृथ्वीराज चौहान शब्दभेदी बाण चलाना जानते थे। ये बात चंदबरदाई ने मोहम्मद गोरी बताई और उन्होंने इस कला प्रदर्शन के लिए मोहम्मद गोरी से मंजूरी ले ली। जिस स्थान पर पृथ्वीराज चौहान अपनी कला का प्रदर्शन करने वाले थे, वहीं पर मोहम्मद गोरी भी मौजूद था। गोरी को मारने की योजना चन्द्रवरदाई के साथ मिलकर पृथ्वीराज चौहान ने पहली ही बना ली थी। जैसे ही प्रदर्शन शुरू होने वाला था उसी समय चन्द्रवरदाई ने अपना प्रसिद्ध दोहा पढ़ा -

“चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण,
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।”

ये दोहा चंद्रवरदाई ने पृथ्वीराज चौहान को संकेत देने के लिए कहा था। इस दोहे को सुनकर पृथ्वीराज चौहान को मोहम्मद गोरी की दूरी व स्थिति पता चल गयी। फिर जैसे ही मोहम्मद गोरी ने प्रदर्शन शुरू करने का आदेश दिया, उसी समय पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को अपने शब्दभेदी बाण के द्वारा मार डाला। मोहम्मद गोरी को मारने के बाद पृथ्वीराज चौहान और चंद्रवरदाई ने स्वयं एक दूसरे के प्राण ले लिए और मित्रता के इतिहास में अपना नाम हमेशा के लिए अमर कर लिया।

संदर्भ

1. महाकवि चन्द्र बरदाई कृत (1-4 Vols.) पृथ्वीराज रासो- सम्पादक कविराव मोहनसिंह
   हिंदी संस्करण 1 जनवरी 2013
   आईएसबीएन -13: 978-9387297043 ISBN-10: 9387297047
2. हिन्दी साहित्यकार चित्रावली, प्रकाशक एवं मुद्रक : हिन्दी बुक सेण्टर, नई दिल्ली
3. अकीदत मंद ख्वाजा साहब, (1995).खादिमों कि कहानी इतिहास की ज़ुबानी
4. विकीपीडिया

• • •